ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 264-269**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

शहरीकरण और वृद्धों की पारिवारिक उपेक्षा : बेघरता एवं सामाजिक असुरक्षा का समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रो0 अनिल कुमार मिश्रा,
2. जगदीप कुमार दिवाकर
शोध निर्देशक एवं प्राचार्य, शोध अध्येता एवं असि0 प्रो0 डी0बी0एस0 कॉलेज, कानपुर (उ0प्र) भारत

Received-17.08.2026, Revised-25.08.2026, Accepted-02.09.2026, **E-mail:jagdeepdiwakar@gmail.com**

सारांशः ***वर्तमान का उत्तर आधुनिक समाज परिवर्तन के एक नए दौर से गुजर रहा है। इस बदलते परिवेश में सामाजिक संबंधों का ताना–बाना पुनः परिभाषित हो रहा है। कुछ रिश्ते मजबूत हो रहे हैं तो कुछ रिश्तो को पारिवारिक एवं सामाजिक उपेक्षा का सामना भी करना पड़ रहा है। इस बदलते परिवेश में रिश्तो के पीछे के समाजशास्त्र को समझना आवश्यक है। हमारे जीवन की गतिविधियों का मुख्य केंद्र आर्थिक है हम रिश्तो के पैमाने को आर्थिक आधार पर तौलने का प्रयास करते हैं। इस प्रक्रिया में कुछ रिश्ते आर्थिक रूप से बोझ प्रतीत होते हैं। सामाजिक एवं नैतिक उत्तरदायित्व के पैमाने कहीं पीछे छूट गए हैं। सबको समेट कर रखने की चाह अब बेमानी सी हो गई है। जहाँ किसी समय हमारे बुजुर्ग हमारी सामाजिक पूंजी हुआ करते थे वर्तमान के उत्तर आधुनिक समाज में वह एक बोझ समझे जाने लगे हैं। शहरी समाज तो बुजुर्गों के लिए अभिशाप साबित हो रहा है। आंकड़े इस बात की गवाही दे रहे हैं की दुनिया की आबादी बहुत तेजी से वृद्ध हो रही है और वृद्धो की संख्या भी कुल आबादी में लगातार बढ़ रही है। ऐसे में वृद्ध लोगों की सामाजिक सुरक्षा का प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण व गंभीर होता जा रहा है। जहाँ पश्चिम के देशों में सामाजिक सुरक्षा के लिए मजबूत प्रबंध उपलब्ध हैं वही हमारे देश में सामाजिक सुरक्षा एवं दायित्व संबंधी संपूर्ण भार व जिम्मेदारी खून के रिश्तों पर निर्भर करती है। परिवार का लगातार छोटा होना, एकांकी परिवारों का उभरना एवं प्राथमिक रिश्तों का कमजोर होना साथ ही साथ ग्रामीण सामाजिक संरचना का कमजोर होना बुजुर्ग आबादी के लिए काल साबित हो रहा है। वैयक्तिक अध्ययन के माध्यम से समाज की अत्यंत धीमी नब्ज को सुनने एवं समझने का प्रयास किया जा रहा है। वैयक्तिक अध्ययन द्वारा हमारी सामाजिक पूंजी के एहसासों एवं कठिनाइयों का वर्तमान परिवेश के आधार पर एक विश्लेषण है।***

कुंजीभूत शब्द– पारिवारिक विघटन, आधुनिक समाज,परित्याग, बेघरपन, वैयक्तिक अध्ययन,सामाजिक संरचना, उत्तरदायित्व, शहरीकरण।

प्रस्तावना– ''भारत में संयुक्त परिवारों की तुलना में एकांकी (Nuclear) परिवारों का अनुपात तेजी से बढ़ा है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में कुल परिवारों में से 50% से अधिक परिवार एकांकी परिवार बन चुके हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में पलायन की दर में 21% से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई।''[1] पारंपरिक रूप से भारतीय समाज एक संयुक्त परिवार प्रणाली पर आधारित समाज रहा है। विश्व में हमारी पहचान वसुधैव कुटुंबकम वाली रही है। हमारे समाज में यद्यपि छोटे से लेकर बड़े सभी का सम्मान समाहित रहा है लेकिन जब बात बुजुर्गों की आती है तब हमारी भावनाएं एवं नैतिकता उच्च स्तर पर पहुंच जाती है। क्योंकि बुजुर्ग न सिर्फ हमारे परिवार प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है बल्कि वह अनुभव, ज्ञान, संस्कार, का आधार भी हैं। जिस पर हमारी परिवार संरचना निर्भर करती है। ''जब तक समाज में रिश्तों का आधार केवल स्वार्थ और आर्थिक लाभ रहेगा, तब तक बुजुर्गों और अक्षम व्यक्तियों का अनादर होता रहेगा। परिवार की नींव नैतिक उत्तरदायित्व पर होनी चाहिए, न कि केवल उपयोगिता पर।''[2]

बुजुर्ग हमारे परिवार की वह पूंजी है जो उस पूरे ताने–बाने को आपस में जोड़े रखती है, जहाँ कई लोग एक साथ एक इकाई की तरह कार्य करते हैं। बुजुर्ग व्यक्ति एक न्यायाधीश की तरह सबके लिए समानुपातिक न्याय की व्यवस्था करता है। हमारे संयुक्त परिवार प्रणाली की सफलता का मुख्य श्रेय बुजुर्ग व्यक्तियों को ही जाता है, क्योंकि उन्होंने घर के मुखिया का दायित्व बखूबी निभाया और परिवार को उच्च स्तर तक ले गए। समय हमेशा एकसमान नहीं रहता है। परिवर्तन प्रकृति का महत्वपूर्ण नियम है स्वयं प्रकृति भी उस परिवर्तन के अधीन है मानव समाज भी इस प्रकृति का एक भाग है। अतः परिवर्तन का प्रभाव मानव समाज पर भी पड़ा और हमारी सामाजिक संरचना के साथ–साथ पारिवारिक संरचना भी परिवर्तन के दौर में आई। ''आर्थिक समृद्धि और विकास तब तक अधूरा है जब तक वह समाज के सबसे असुरक्षित वर्गों, जिसमें वृद्ध आबादी भी शामिल है, को सामाजिक सुरक्षा और गरिमापूर्ण जीवन न दे सके। केवल जीडीपी वृद्धि, सामाजिक रिश्तों की प्रगाढ़ता का विकल्प नहीं हो सकती हैं।[3] औद्योगिक क्रांति ने पारिवारिक संरचना पर सबसे पहले प्रहार किया जहाँ ग्रामीण कृषि एवं पशुपालन संरचना का विघटन प्रारंभ होता है और इसी विघटन के फलस्वरुप शहरीकरण का जन्म होता है। ''औद्योगिक और आधुनिक समाज में 'पृथक एकांकी परिवार' की मांग बढ़ती है क्योंकि यह श्रम की गतिशीलता के लिए अनुकूल है। हालांकि, इसका सबसे बड़ा नकारात्मक प्रभाव यह होता है कि बुजुर्ग आबादी परिवार की मुख्य संरचना से बाहर हो जाती है।''[4]

शहरीकरण के फलस्वरुप लोगों ने शिक्षा, स्वास्थ्य रोजगार एवं अन्य आवश्यकताओं हेतु शहरों की ओर पलायन किया। हमारे ग्रामीण अंचल खाली होते गए एवं शहरों का निर्माण एवं पुनर्निर्माण होता गया। पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में संयुक्त परिवार प्रणाली आधुनिकता के चक्रव्यूह में फंसकर एकांकी परिवार प्रणाली में तब्दील हो गई। जहाँ इसकी कुछ सामाजिक उपयोगिता थी जैसे महिलाओं को अत्यधिक अधिकार प्राप्त हुए, उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन का पुनर्निर्माण किया एवं स्वतंत्रता एवं अधिकारों का एक नया अनुभव हासिल किया। वही संयुक्त परिवार प्रणाली के ह्रास ने बुजुर्ग आबादी के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया। जहाँ ग्रामीण जीवन, कृषि, पशुपालन, पड़ोस, सामाजिक रिश्ते आदि बुजुर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा, सम्मान एवं भावनात्मक संबल था। वह शहरों में आकर धीरे–धीरे स्वत समाप्ति की ओर अग्रसर होने लगा। अगर यह कहा जाए कि शहरीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण एवं उत्तर आधुनिक समाज का सबसे ज्यादा खामियाजा अगर किसी को भुगतना पड़ा है, तो वह बुजुर्ग आबादी है। एन एस ओ 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, शहरीकरण एक तरह से बुजुर्गों के लिए काल साबित हुआ है क्योंकि शहरी आधुनिक समाज में बुजुर्गों के अधिकार एवं दायित्व अत्यंत सीमित है। ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 70% और शहरी क्षेत्रों में 65% बुजुर्ग पूर्णतः दूसरों पर आर्थिक रूप से आश्रित हैं। शहरी समाज ने उनकी भूमिका को अत्यंत सीमित व संकुचित कर दिया है। जहाँ ग्रामीण समाज में कृषि, पशुपालन जैसे कार्यों में उनकी अत्यधिक उपयोगिता थी, उनके अनुभवों का महत्व था। औद्योगिक समाज में उनके अनुभवों का कोई मोल नहीं रह गया। हमारी भूमिका ही हमारी प्रस्थिति के महत्व को तय करती है। जहाँ हमारे परंपरागत समाज में बुजुर्गों की भूमिका परिवार के मुखिया के तौर पर थी, गांव में मुखिया के तौर पर थी, परिवार को जोड़े रखने वाले सृजनकर्ता के तौर पर थी। वह शहरी समाज में आकर भूमिका विहीन हो गया। जब भूमिका ही समाप्त हो गई तो पद का क्या महत्व शेष रह जाएगा? शहरी आर्थिक संपन्नता ने

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

हमारे जीवन में उत्तरोत्तर सुधार किया। शिक्षा स्वास्थ्य, बुनियादी सुविधाओं में आमूल–चूल परिवर्तन हुआ लेकिन सामाजिक संबंधों की प्रगाढ़ता कहीं गुम सी हो गई। हर व्यक्ति अपने आप में मस्त है। आस–पड़ोस, समुदाय से उसे बहुत सरोकार नहीं है। इसका असर बुजुर्गों के साथ हमारे संबंधों पर भी पड़ा है। अत्यधिक व्यक्तिनिष्ठता, उपभोक्तावादी संस्कृति और आर्थिक उपयोगितावाद जैसे विचारों ने सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों की मजबूती को खोखला कर दिया। जहाँ पहले परिवार सामाजिक संबंधों एवं उत्तरदायित्व का संगम था, वही आज का परिवार आर्थिक उत्तरदायित्व की ओर झुकता जा रहा है, जिसमें आपकी भूमिका का निर्माण एवं महत्व आपकी आर्थिक उपयोगिता के आधार पर निर्धारित किया जाने लगा है। जब आर्थिक उपयोगिता के आधार पर व्यक्ति का पद, गरिमा एवं दायित्वों का निर्धारण किया जाएगा ऐसे में बुजुर्ग आबादी जो शारीरिक रूप से अक्षम हो चुकी है और आर्थिक उपार्जन करने में समर्थ नहीं है उसका महत्व गिरना निश्चित है। ''भारतीय समाज में आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन हुआ है। एकल (एकांकी) परिवारों के उभार ने बुजुर्गों की उस केंद्रीय भूमिका (Head of the Family) को समाप्त कर दिया है, जो उन्हें पारंपरिक ग्रामीण समाज में प्राप्त थी।''[5] पारिवारिक रिश्तों को प्रेम की जगह जब आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जाएगा तो परिवार में संपत्ति संबंधी विवाद, पारिवारिक क्लेश आदि उत्पन्न होंगे जो अंततः परिवार के वृद्ध लोगों के लिए अत्यंत खराब साबित होंगे एवं उनके पारिवारिक निष्कासन का कारण भी बनेंगे।

अध्ययन का महत्व एवं आवश्यकता– भारत की आबादी लगभग एक अरब 40 करोड़ है। भारत दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। इस विशाल आबादी में बुजुर्गों की संख्या भी अत्यधिक है। जन्म और मृत्यु जीवन का एक सत्य है और यह भी कह सकते हैं कि जैसे–जैसे हमारी आयु ढलान की ओर जाएगी, हमारा शरीर भी क्षरण की ओर जाएगा। शारीरिक, मानसिक अस्वस्थता एवं आर्थिक अभाव आदि के कारण बुजुर्गों का जीवन उपेक्षा एवं कष्टमय होता जा रहा है। उनका अंतिम समय दुखद एवं गरिमा विहीन होता जा रहा है। हमारा शहरी समाज बुजुर्ग आबादी के साथ अनुकूलन नहीं कर पा रहा है अथवा ऐसी संरचना का निर्माण करने में असमर्थ साबित हो रहा है। जो बुजुर्ग आबादी के अनुकूल हो एवं उनकी आवश्यकताओं को पूरी करती हो। प्राय देखा गया है की वृद्ध आश्रम शहरों में ही पाए जाते हैं एवं इन आश्रमों में रहने वाले अधिकांश लोग शहरी आबादी से संबंधित है जिससे एक बात स्पष्ट होती है कि वृद्धावस्था के कारण उत्पन्न हुआ बेघरपन शहरी आबादी की ही मुख्य समस्या है। आज नहीं तो कल सभी को इस अवस्था की ओर प्रस्थान करना है इसलिए यह आवश्यक है कि इस समस्या के पीछे छिपे कारणों का अध्ययन अत्यंत गहनता के साथ किया जाए एवं भविष्य के लिए इसके निवारण भी प्रस्तुत किए जाएं। ताकि जीवन का सार सभी के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध हो। कुछ लोगों के लिए वृद्धावस्था कष्टकारी समय न बन जाए। इसलिए जितना आवश्यक परिवार एक छोटे बच्चों के लिए होता है उतना ही आवश्यक परिवार एक वृद्ध व्यक्ति के लिए भी होता है। अतः हमारा अध्ययन इस समस्या के पीछे छिपे निहित कारणों का बारीकी से विश्लेषण करता है। जनगणना 2011 के अनुसार, भारत वृद्ध जनों की कुल आबादी 10.38 करोड़ है, जो कुल आबादी के लगभग 8 फ़ीसदी से भी ज्यादा है। जनगणना 2011 के अनुसार, भारत में बेघर लोगों की संख्या 17,73040 लाख के लगभग है जो कुल आबादी का 0.15% है।

अध्ययन क्षेत्र– अध्ययन क्षेत्र के रूप में कानपुर महानगर के पनकी क्षेत्र में स्थित स्वराज ओल्ड एज होम को लिया गया है। कानपुर महानगर उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख औद्योगिक नगर है। जहाँ जनसंख्या का संकेंद्रण अत्यधिक मात्रा में है साथ ही साथ जनसंख्या बदलाव का भी एक प्रमुख स्थल है। पारिवारिक संरचना में बदलाव के फलस्वरूप एक बड़ी आबादी बेघरपन की शिकार हुई जो भिक्षावृत्ति करके, साथ ही साथ रैन बसेरों, फुटपाथों एवं वृद्धाश्रम में जीवन गुजारने को मजबूर हुए। कानपुर को अंग्रेजों ने एक नई पहचान दी। अंग्रेजी रेजीमेंट की स्थापना के साथ ही कानपुर विकास एवं व्यापार के एक नए केंद्र के रूप में उभरा। गंगा नदी जैसी विशाल जल संरचना ने इसको कोलकाता बंदरगाह तक एक सुगम मार्ग उपलब्ध कराया जिस कारण कानपुर सूती एवं जूट सामानों का एक बड़ा व्यापारिक केंद्र बन गया । इसीलिए कानपुर के आसपास के छोटे–छोटे जनपदों से बड़ी मात्रा में लोगों का रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं के लिए बड़ी मात्रा में पलायन हुआ और कानपुर एक महानगर के रूप में परिवर्तित होता गया। विकास की इस प्रक्रिया में घर का सबसे बुजुर्ग व्यक्ति उपेक्षित हो गया। कानपुर में बड़ी संख्या में वृद्ध आश्रम स्थित है जो इस बात की गवाही दे रहे हैं कि कानपुर में बड़ी संख्या में लोग बेघरपन के शिकार हुए हैं अतः कानपुर नगर को अध्ययन के लिए उपयुक्त पाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य– अध्ययन के मुख्य रूप से तीन उद्देश्य चुने गए हैं–

1. वृद्धों की बेघरपन का अध्ययन
2. वृद्धो की पारिवारिक स्थितियों का अध्ययन
3. सामाजिक एवं भावनात्मक असुरक्षा का अध्ययन

शोध प्रविधि– क्योंकि अध्ययन वृद्ध लोगों से संबंधित है इसलिए इसमें मात्रात्मक से ज्यादा गुणात्मक अनुभव को प्राथमिकता देना उचित होगा। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया है।

वैयक्तिक अध्ययन पद्धति (Case study)- अध्ययन के लिए वैयक्तिक अध्ययन विधि का चयन किया गया है। बेघरपन के शिकार हुए वृद्ध लोगों के अध्ययन हेतु सबसे उपयुक्त प्रणाली केस स्टडी है, क्योंकि यह एक गुणात्मक विधि है। बुजुर्ग आबादी उपेक्षा, भावनात्मक अलगाव की शिकार रही हैं। उनकी भावनाओं को समझने के लिए आंकड़ों की नहीं बल्कि गहराई की आवश्यकता है जिसके लिए केस स्टडी विधि ही सर्वोत्तम विधि है। जिस कारण इस विधि का चयन किया गया।

प्रतिचयन विधि (Sampling method)- प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें एक वृद्धआश्रम से दो बेघर बुजुर्गों का चयन किया गया है। बेघर बुजुर्गों की पहचान एवं चयन के लिए मुख्य मानदंड इस प्रकार है–

1. उत्तरदाता की आयु 60 वर्ष या इससे अधिक हो।
2. उत्तरदाता पारिवारिक विघटन, उपेक्षा, एवं परित्याग के कारण बेघर हुआ हो।

तथ्य संकलन के उपकरण एवं स्त्रोत–

- प्राथमिक आंकड़ों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया जिसमें अनौपचारिक बातचीत एवं सहभागी अवलोकन प्रक्रिया के माध्यम से आंकड़े एवं तथ्य एकत्रित किए गए।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

- द्वितीय स्रोतों के रूप में भारत सरकार द्वारा जारी जनगणना रिपोर्ट, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के विभिन्न दस्तावेज, विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित घटनाएं, समाजशास्त्रीय शोध पत्र–पत्रिकाएं एवं विभिन्न तरह की वेबसाइटों पर उपलब्ध जानकारी आदि द्वारा द्वितीयक आंकड़ों का संकलन किया गया।

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य (Theoretical perspective)- इस शोध पत्र में मुख्य रूप से दो समाजशास्त्रीय सिद्धांतों को आधार के रूप में समझ गया है, जो इस प्रकार है–

1. **पियरे बोर्दियों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक पूंजी का सिद्धांतः** पारिवारिक विघटन सिर्फ किसी व्यक्ति का व्यक्तिगत नुकसान नहीं बल्कि यह समाज की क्षति है, क्योंकि पारिवारिक विघटन के फलस्वरुप वृद्ध लोगों के रूप में उपलब्ध हमारी सामाजिक एवं सांस्कृतिक पूंजी का भी क्षरण होता है।
2. **संरचनात्मक–प्रकार्यवाद का सिद्धांतः** पार्सन्स द्वारा विकसित यह सिद्धांत इस तथ्य पर आधारित है कि समाज एक व्यवस्था है और इस व्यवस्था में विभिन्न इकाइयों की अपनी–अपनी भूमिका है, जिसको वह AGIL मॉडल द्वारा समझाने का प्रयास करते हैं। किसी एक इकाई के कार्य में बाधा आगे की सभी इकाइयों को अव्यवस्थित कर देती है।

गहन केस स्टडी विश्लेषण–

केस स्टडी (न. 1) पारिवारिक विघटन, संपत्ति विवाद और बलपूर्वक निष्कासनः

विवरण–

नाम – स्वामीदीन (बदला हुआ नाम)
आयु एवं लिंग – 68/ पुरुष
जाति एवं धर्म – ब्राह्मण, हिंदू
वैवाहिक स्थिति – विधुर

सामाजिक–पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं विघटन की स्थिति– स्वामीदीन कानपुर की एक प्रसिद्ध कपड़ा मिल में कार्य करते थे। जो काफी समय पहले ही सरकार द्वारा बंद की जा चुकी है। उनके तीन बच्चे हैं। दो पुत्र और एक पुत्री। तीनों का विवाह संपन्न हो चुका है। सरकार द्वारा एकमुश्त समाधान के तौर पर उनको एक बड़ी धनराशि प्राप्त हुई थी जिसका उपयोग उन्होंने पुत्र–पुत्रियों के विवाह एवं पैतृक घर के जीणोद्धार में किया। बची हुई धनराशि का उपयोग एक बेटे के व्यवसाय में किया।

पारिवारिक विघटन एवं तनाव की स्थिति तब शुरू होती है जब आर्थिक रूप से समस्याओं का सामना कर रहे छोटे बेटे की व्यवसाय को स्थापित करने के लिए उन्होंने अपनी बची हुई शेष पूंजी को लगा दिया। फल स्वरुप बड़े बेटे ने इस बात का विरोध किया और घर में कलह का वातावरण निर्मित हुआ। दूसरी ओर शारीरिक अस्वस्थता की वजह से नियमित चिकित्सा की आवश्यकता हुई। ऐसी स्थिति में दोनों ही बेटों ने किसी तरह की आर्थिक सहायता से हाथ खींच लिए और परिवार में उन्हें बोझ माना जाने लगा। घर का बंटवारा हो गया और दोनों ही बेटों ने पिता द्वारा उनके साथ भेदभाव का आरोप लगाकर अपने साथ रखने से इनकार कर दिया।

बेघर होने का निर्णायक बिंदु या स्थिति– परिवार में कलह का वातावरण तभी निर्मित हो गया था जब छोटे बेटे के व्यवसाय के लिए पिता ने आर्थिक मदद दी। घर के बंटवारे के उपरांत दोनों ही बेटे एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाकर पिता को अपने साथ रखने से इनकार करने लगे। बेटा एवं बहू द्वारा इस अपमानजनक पीड़ा के कारण उन्होंने स्वयं घर छोड़ने का निर्णय लिया। आस–पड़ोस के लोगों की लज्जा से बचने के लिए उन्होंने अपना घर छोड़ दिया एवं कुछ दिन कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन, बस अड्डे पर भिक्षावृत्ति करने के बाद वह अंततः पनकी मंदिर पहुंचे जिसके पीछे निर्मित वृद्ध लोगों के आश्रम की उनको जानकारी हुई और अंततः वह वहीं रहने लगे।

वर्तमान जीवन की स्थिति और अस्तित्व की रणनीति– स्वामीदीन लगभग 18 महीना तक कानपुर के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर भिक्षावृत्ति करते रहे एवं कभी–कभी दुकानों पर छोटा–मोटा काम आदि करके गुजारा करते रहे। वर्तमान में वह लगभग 2 वर्ष से वृद्धावस्था आश्रम में रह रहे हैं। वर्तमान में वह गहरी मानसिक तनाव से गुजर रहे हैं। उन्हें इस बात का अत्यंत गहरा दुख है कि जिन बच्चों, परिवार व घर के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया एवं अपनी मेहनत की कमाई की पाई–पाई उस घर को बनाने में खर्च कर दी अंततः उन्हें उसी घर से ही निकाल दिया गया। वर्तमान में वह अपने जैसे कई लोगों के बीच में रह रहे हैं। सबकी अपने–अपने जीवन की दुखभरी कहानी है। अपने जैसे लोगों के बीच स्वामीदीन को कुछ संबल प्राप्त होता है लेकिन उन्हें इस बात का गहरा आघात है कि जीवन के अंतिम समय में उनका परिवार उनका सहारा नहीं बना तथा वह बेसहारा होकर रह रहे हैं।

वर्तमान में परिवार की स्थिति– पिछले लगभग साढ़े तीन वर्षों में सिर्फ एक बार ही उनके बेटों ने इनकी सुध ली। वह वृद्धआश्रम में इनको देखने आए लेकिन किसी ने भी इनको अपने साथ ले जाने का प्रयास नहीं किया। इस बात से उत्तरदाता गहरी निराशा एवं अवसाद में चला गया। उसे इस बात का भान हो गया कि अब उसका बचा हुआ जीवन शायद इसी वृद्धआश्रम में व्यतीत होगा। इस बात को शायद अर्न्तमन मन से स्वीकार कर लिया है। इसीलिए उत्तरदाता धीरे–धीरे स्थिरता की ओर अग्रसर हो रहा है। लेकिन पुरानी यादें एवं भावनाएं उसे आज भी परेशान करती हैं। अंततः वहां अपनी वर्तमान स्थिति को स्वीकार करने की ओर धीरे–धीरे अग्रसर होता हुआ प्रतीत हो रहा है।

केस स्टडी (2) आधुनिक एकांकी परिवार, आधुनिक मूल्य, अंतर पीढ़ीगत संघर्ष एवं महिला बेघरता–

शकुंतला देवी (बदला हुआ नाम)
आयु एवं लिंग – 70/ महिला
जाति एवं धर्म – कायस्थ/हिंदू
वैवाहिक स्थिति – विधवा

सामाजिक–पारिवारिक स्थिति, पृष्ठभूमि एवं विघटन का क्रम– शकुंतला देवी के पति का निधन 10 वर्ष पूर्व हो चुका है। उनके पति का अपना स्वयं का एक व्यवसाय था। पति के जीवित रहते उनकी पारिवारिक स्थिति अत्यंत उच्च व सुखद थी। सारी समस्याएँ पति की मृत्यु के उपरांत शुरू होती हैं जब वह आर्थिक रूप से बेटों पर निर्भर हो जाती हैं। शांति देवी का एक बेटा एवं एक

बेटी है और दोनों ही विवाहित हैं। दोनों ही बच्चे उच्च शिक्षित हैं बेटी किसी कंपनी में वर्तमान में कर्नाटक राज्य में कार्यरत है। बेटा–बहू दोनों कार्यरत हैं एवं शहर के एक अपार्टमेंट में रहते हैं।

बेघर होने का निर्णायक बिंदु– जहाँ शकुंतला देवी सादा जीवन उच्च विचार की एक परंपरावादी, धार्मिक महिला थी, वही उनके अनुसार उनकी बहू आधुनिक विचारों एवं मूल्य वाली महिला है। जिस कारण उनके बीच प्राय विभिन्न बातों पर मतभेद रहते थे। आधुनिक जीवन शैली एवं मूल्य शकुंतला देवी को पसंद नहीं आते थे जबकि उनकी बहू परंपरावादी विचारों एवं रोक–टोक को पसंद नहीं करती थी। जिस कारण आगे चलकर विवाद एवं कलह गहराती गई। वह कुछ समय के लिए बेटी के पास चली गई लेकिन बेटी व दामाद के कामकाजी होने के कारण वहां पर भी उनके विचारों का तालमेल नहीं बन पाया और अंततः कानपुर वापस आकर वृद्ध आश्रम में जीवन व्यतीत करने लगी। शुरुआत में बेटे ने मनाने का प्रयास किया लेकिन विचारों की सहमति न बन पाने के कारण शकुंतला देवी ने घर वापस जाने इनकार कर दिया और स्थाई रूप से वृद्ध आश्रम में रहने लगी। इस स्थिति को कुछ समय बाद उनके बेटे–बहु ने भी स्वीकार कर लिया।

वर्तमान जीवन स्थिति और अस्तित्व की रणनीति– वर्तमान में वह पिछले दो वर्ष से वृद्धाश्रम में रह रही हैं। बेटी का कभी–कभी फोन आता है लेकिन वह भी समय बीतने के साथ–साथ कम होता जा रहा है। बेटे का कभी फोन नहीं आता वह स्वयं ही कभी–कभी देखने आ जाता हैं। वर्तमान स्थिति को लेकर शकुंतला देवी संतुष्ट तो नहीं है लेकिन वह अपने घर के माहौल से बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं थी। उनको लगता है ऐसे घर में रहने से जहाँ उनकी बात नहीं सुनी जाती है उनके अनुसार काम नहीं किया जाता है। वहाँ रहने से अच्छा तो इसी वृद्धाश्रम में रहना अधिक उचित है। यहाँ का जीवन उनके घर से बेहतर है यहां कोई किसी का मालिक नहीं है और ना ही कोई किसी का नौकर है। सभी समान है। कोई किसी पर अधिकार नहीं चलाता है। यह पूछने पर कि अगर बेटे–बहु अपनी गलती स्वीकार करें तो क्या वापस अपने घर जाने को तैयार हैं? इस पर शकुंतला देवी का उत्तर था कि सिर्फ गलती स्वीकार करने से कुछ नहीं होगा। घर का माहौल एवं मूल्य बदलने भी आवश्यक है। एक जमाने में उनके घर का माहौल अत्यधिक धार्मिक व परंपरावादी था जबकि वर्तमान में वह आधुनिक मूल्यों से ओतप्रोत है। जिनको आप पसंद नहीं करती हैं। उनको बहुत कम उम्मीद है कि उनके बेटा और बहू ऐसा करेंगे। दूसरा वह अपार्टमेंट के जीवन को पसंद नहीं करती। वह अपने पुश्तैनी घर में रहना चाहती हैं जिसे बेटे और बहू ने खंडहर समझकर बेच दिया था।

भावनात्मक एवं अन्य पक्ष– उत्तरदाता भावनात्मक रूप से अत्यंत अस्थिर हैं। परिवार से बिछड़ने का दुख उन्हें परेशान करता है। साथ ही साथ उनके स्वयं के बेटे का बहू के प्रति अनुराग एवं उनके प्रति तिरस्कार की भावना रखना। उन्हें अंदर से कमजोर कर देता है। उनके अनुसार वह समाज में कहीं भी जाना नहीं चाहती, क्योंकि एक समय समाज में उनकी अत्यधिक प्रतिष्ठा थी? ऐसी स्थिति में पहुंचने के बाद वह रिश्तेदारों को क्या मुँह दिखाएँ? उन्हें इस बात का दुख एवं डर है। शुरुआत में कुछ रिश्तेदारों ने मध्यस्थता एवं समझने का प्रयास किया बाद में उन लोगों ने भी दूरी बना ली।

शोध के मुख्य निष्कर्ष–

- **पारिवारिक विघटनः** उपरोक्त केस स्टडी का अध्ययन करने के उपरांत एक महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होता है कि भारत में आधुनिकता सभी क्षेत्रों में समान रूप से लागू नहीं है। अभी भी ग्रामीण अंचल आधुनिक जीवन मूल्य एवं तकनीक से पीछे है। जबकि शहरी जीवन में आधुनिकता का प्रवेश कहीं अधिक तेजी से हुआ है। ध्यान देने योग्य तथ्य है कि शहरी जीवन में भी पीढ़ीगत विचारों एवं मूल्यों का अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। ''जिस समाज या घर में बुजुर्गों का आदर–सत्कार नहीं होता, वह समाज अपनी जड़ों से कट जाता है। हमारी परंपरा 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव' की रही है, जो आर्थिक लाभ–हानि से ऊपर है।''[6] शहरी आधुनिक संस्कृति में पली–बढ़ी युवा पीढ़ी अधिक उदार एवं वैश्विक मूल्यों से प्रेरित है। आधुनिकतावादी संस्कृति ने पश्चिम के विचारों को अधिक मात्रा में ग्रहण किया है। जिस कारण सादा जीवन, उच्च विचार जैसे सिद्धांत सिर्फ पुरानी पीढ़ी के लिए बचे हैं। युवा पीढ़ी इस तरह के विचारों से पृथक है।
- **पीढ़ीगत अंतरालः** शहरी समाज में वृद्ध लोगों एवं युवा पीढ़ी के बीच एक पीढ़ीगत विचारों का अंतराल देखने को मिलता है। केस संख्या–2 में स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि एक वृद्ध महिला जो अत्यंत साधारण एवं धार्मिक पृष्ठभूमि को पसंद करती है आधुनिक पहनावा एवं खान–पान से दूरी बनाकर रखती है। वही परिवार के युवा सदस्य आधुनिक खान–पान, जीवन शैली, पहनावा एवं संस्कृति से ओतप्रोत है। विचारों के इस द्वंद्व व टकराव ने परिवार में विघटन की स्थिति पैदा कर दी जिसके फलस्वरुप वृद्ध लोगों का समायोजन करना लगभग असंभव होता जा रहा है।
- **शहरी जीवन का अलगावः** शहरी जीवन ग्रामीण जीवन की तुलना में कई मामलों में भिन्न है। जहाँ ग्रामीण जीवन सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक संबंधों की गहराई वह मजबूती पर विश्वास रखता है। वहीं शहरी जीवन द्वितीयक संबंधों, व्यक्तिगत विचारों, स्वतंत्रता जैसे मूल्यों को धारण किए हुए। जिस कारण वर्तमान उत्तर–आधुनिक शहरी समाजों में वृद्ध लोगों का जीवन एकांकीपन का शिकार हो गया है, क्योंकि आधुनिक टेक्नोलॉजी से वह विरत है। आधुनिक मूल्यों वाली संस्कृति से उनका अलगांव है और शहरों में आस–पड़ोस प्रायः एक–दूसरे से दूरी बनाए रखते हैं। जिस कारण वृद्धो की स्थिति सामाजिक रूप से अलगाव जैसी हो जाती है।
- **आर्थिक पराधीनताः** शहरी समाज में रहने वाले वृद्ध लोग अगर वह स्थाई रोजगार जैसे सरकारी नौकरी आदि से रिटायर नहीं हुए हैं तो उनके पास पेंशन जैसा विकल्प नहीं होता है। ऐसे लोग जब तक शारीरिक रूप से सक्षम होते हैं, आर्थिक रूप से भी संपन्न होते हैं। एवं आत्मनिर्भर होते हैं तब तक उन्हें कोई समस्या प्रायः नहीं आती हैं। लेकिन जैसे ही शारीरिक क्षमता कमजोर होती है वह अपने बच्चों पर निर्भर हो जाते हैं। ऐसे में वह एक तरह से आर्थिक रूप से पराधीन हो जाते है। ''पूंजीवादी और उपभोक्तावादी समाज मनुष्य के बीच के भावनात्मक संबंधों को केवल 'नकद भुगतान' (Cash Nexus) और 'आर्थिक स्वार्थ' के रिश्ते में बदल देता है। रिश्ते प्रेम के बजाय उपयोगिता से तय होने लगते हैं।''[7] लोग जब तक बच्चों के अनुसार चलते हैं तब तक तो ठीक है, लेकिन जैसे ही वह अपनी मान्यताओं के हिसाब से चलने का प्रयास करते हैं। परिवार में विवाद एवं द्वंद की स्थिति पैदा होती है, क्योंकि हमारे समाज की ऐसी मान्यता है कि जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है प्राय परिवार व समाज में उसी की चलती है।
- **कानूनी व संस्थागत तंत्र की विफलताः** यद्यपि सरकारी प्रयासों के फलस्वरूप कई ऐसे कानून बने हुए हैं जो बुजुर्गों को अपने परिवार में पर्याप्त सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते हैं किंतु इसके बावजूद हमारी सामाजिक मान्यताएं व

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

परंपराएं इसमें बाधा पैदा करती है। ऐसे कई उदाहरण हमारे सामने आते हैं, जिसमें एक पिता ने अपने बच्चों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई का रास्ता चुना हो। माता–पिता स्वयं कष्ट सह लेंगे लेकिन अपने बच्चों के प्रति कोई ऐसा कदम उठाने से परहेज करते हैं जिससे उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़े। यह एक तरह से हमारी सामाजिक संरचना की असफलता है कि वह बुजुर्ग लोगों के प्रति ऐसी सामाजिक भावनाएं, विचार व व्यवस्था निर्मित करने में असफल रहा कि उनका वृद्धावस्था की अवस्था ठीक ढंग से भरण हो सके।

समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का विश्लेषण–

- **पियरे बोर्दियों का सामाजिक, सांस्कृतिक पूंजी का विश्लेषणः** वर्तमान आधुनिक उपभोक्तावादी समाज आर्थिक पूंजी की बात तो करता है लेकिन सामाजिक व सांस्कृतिक पूंजी के निर्माण के प्रति उसमें कोई विशेष अनुराग देखने को नहीं मिलता है। जीवन के ठीक ढंग से संचालन के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता आवश्यक है। अच्छा मकान हो, संपत्ति हो, लेकिन मनुष्य होने के नाते सिर्फ भौतिक संसाधन ही हमारे जीवन के लिए पर्याप्त नहीं है। सामाजिक पूंजी के बिना हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते। सामाजिक संबंध, सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक नियम आदि हमको एक मनुष्य के रूप में बांधे रखते हैं एवं दूसरे मनुष्यों के लिए हमारे मन में प्रेम, अनुराग व संवेदनाएं पैदा करते हैं। उपभोक्तावादी समाज का चरित्र इससे उलट है। यह हमें अधिक से अधिक धन कमाने को तो प्रेरित करता है। लेकिन सामाजिक संबंधों के रूप में जो हमारी सामाजिक पूंजी थी उसको कमाने के प्रति हमें जागरुक नहीं करता। मनुष्य को सामाजिक पूंजी की आवश्यकता सबसे ज्यादा वृद्धावस्था में पड़ती है। बोर्दियों का सिद्धांत आज की इस आधुनिक व्यवस्था में जहां वृद्धजन अपना सामाजिक समायोजन करने में असमर्थ हो रहे हैं सहायक सिद्ध होता है।
- **संरचनात्मक–प्रकार्यवाद एवं आधुनिक समाजः** पार्सन्स ने अपने सिद्धांत में महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किया है कि हमारे समाज की संरचना किस प्रकार निर्मित है। वह सभी का समायोजन करती है छोटी–छोटी इकाइयों से मिलकर हमारी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण होता है। वर्तमान आधुनिक एवं उत्तर आधुनिक शहरी समाजों में परंपरागत सामाजिक संरचना के विचार अत्यंत क्षीण होते जा रहे हैं। व्यक्तिवाद, अधिकारवाद, उपभोक्तावाद जैसे आधुनिक जीवन मूल्यों ने हमारे परंपरागत समायोजन वाली व्यवस्था का क्षरण कर दिया है। जिस कारण वृद्धजनों का शहरी समाजों में समायोजन निरंतर कठिन होता जा रहा है एवं उनके बेघर होने की स्थिति उत्पन्न होने लगी। शहरों में लगातार बढ़ते ओल्ड एज होम इस बात की स्पष्ट गवाही है कि हमारा शहरी ताना–बाना परंपरागत विचारों को एवं मूल्यों को धारण करने वाले लोगों के लिए अनुपयुक्त होता जा रहा है।

सुझाव एवं नीतिगत सिफारिशें–

- शहरों में रैन बसेरे एवं वृद्धावस्था आश्रम पर्याप्त नहीं हैं, इनकी संख्या एवं इनमें सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए।
- आधुनिक युवा पीढ़ी में परंपरागत सामाजिक मूल्यों के प्रति जो उपेक्षा का भाव है उसके प्रति भी समायोजन जैसे, विचार उत्पन्न किए जाने चाहिए।
- पारिवारिक परामर्श केंद्र और अधिक सुगम व व्यावहारिक होने चाहिए।
- भरण–पोषण संबंधी कानून अधिक सरल व उपयुक्त होने चाहिए।
- वृद्ध लोगों को भी आधुनिक जीवन मूल्य के प्रति जागरूक होना चाहिए।
- वृद्धावस्था पेंशन जैसी स्कीम का विस्तार किया जाए एवं इनमें दी जाने वाली सहायता को और बढ़ाया जाए।

निष्कर्ष– आधुनिक समाजों में आधुनिक जीवन मूल्यों एवं पीढ़ीगत संघर्ष के कारण पैदा हुए पारिवारिक विघटन का कारण सिर्फ वित्तीय पराधीनता या आधुनिक जीवन मूल्यों को मान लेना सच्चाई से मुंह छुपाने जैसा है। शहरी समाज का ये संकट धीरे–धीरे ग्रामीण क्षेत्र की तरफ अग्रसर हो रहा है अतः इसे किसी एक समाज का संकट मान लेना झूठी तसल्ली होगी। यह हमारे सामाजिक संरचना के टूटने एवं आधुनिक व परंपरागत जीवन मूल्यों के पैदा हुई दरार का नतीजा है। जिसका समाधान किसी को दोष देने से नहीं निकलेगा बल्कि हमें अपने समाज का आधुनिक जीवन मूल्य के अनुरूप एवं परंपरागत जीवन के मूल्य जो वर्तमान समाज में उपयोगी है उनका एक ऐसा मिश्रण तैयार करना होगा जो दोनों पीढ़ियों के लोगों के लिए समायोजन आसान हो। ''मनुष्य को सदैव क 'साध्य' (End in itself) के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि केवल किसी उद्देश्य की पूर्ति के 'साधन' (Means) के रूप में। जब हम इंसानों को उनकी उपयोगिता के आधार पर आंकते हैं, तो हम उनकी मानवीय गरिमा का हनन करते हैं।''[8]

वर्तमान जीवन मूल्यों को पूरी तरह से तिरस्कार कर देना वैश्विक विकास से स्वयं को पीछे धकेल देना जैसा होगा। सामाजिक, सांस्कृतिक पूंजी अमीर और गरीब सभी के लिए आवश्यक है। अतः हमें एक ऐसे समाज का निर्माण करना होगा जहाँ वह लोग भी अपना समायोजन कर सके जिनकी शिक्षा आधुनिक नहीं है। परंपरागत विचार जो आधुनिक मूल्यों के साथ टकराव पैदा कर रहे हैं। हम एक ऐसी स्थिति ढूंढनी पड़ेगी जो दोनों के बीच समन्वय स्थापित कर सके। यहाँ समाज के साथ–साथ सरकार की भी एक जिम्मेदारी है कि वह वृद्धजनों के लिए नीतियों का निर्माण करते समय अधिक व्यावहारिक नीतियों का निर्माण करें ताकि बेघर होने की स्थिति में उनके पास रहने, खाने का पर्याप्त सहारा हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). *Census of India 2011: Household and housing data.* Ministry of Home Affairs, Government of India.
2. Phule, J. (2002). *Selected writings of Jotirao Phule* (G. Deshpande, Ed.). LeftWord Books.
3. Sen, A. (1999). *Development as freedom.* Oxford University Press.
4. Parsons, T. (1955). The American family: Its relations to personality and to the social structure. In T. Parsons & R. F. Bales (Eds.), *Family, socialization and interaction process* (pp. 3–33). Free Press.
5. Srinivas, M. N. (1966). *Social change in modern India.* University of California Press.
6. Vivekananda, S. (1989). *The complete works of Swami Vivekananda* (Vol. 3). Advaita Ashrama.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

7. Marx, K., & Engels, F. (2002). *The Communist Manifesto* (G. S. Jones, Ed.). Penguin Books. (Original work published 1848).
8. Kant, I. (1998). *Groundwork of the metaphysics of morals* (M. Gregor, Ed. & Trans.). Cambridge University Press. (Original work published 1785).
9. NITI Aayog. (2021). *Senior care reform in India: Reimagining the senior care paradigm.* Government of India.
10. HelpAge India. (2022). *Bridge the gap: Understanding elder needs on World Elder Abuse Awareness Day.* HelpAge India Research Series.
11. Ahuja, R. (1999). *Indian social problems.* Rawat Publications.
12. Srinivas, M. N. (1966). *Social change in modern India.* University of California Press.
13. Gore, M. S. (1968). *Urbanization and family change.* Popular Prakashan.

*****